आकार IAS

Shaping Your Dreams

# मानव संसाधन विकास

## शिक्षा, सामाजिक मुद्दे एवं कल्याणकारी कार्यक्रम

### मुख्य परीक्षा

**प्रश्नपत्र-02 | भाग-02 | इकाई-03**

160/4, A B Road, Pipliya Rao, Near Vishnupuri I-Bus Stop, Indore (MP)

aakarias2014@gmail.com www.aakarias.com

9713300123, 6262856797, 6262856798

# प्रश्न पत्र - 02

## मानव संसाधन विकास
## HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT

❒ भाग - 02

इकाई - 03

- **शिक्षा** - प्रारंभिक शिक्षा, उच्च शिक्षा एवं तकनीकी एवं चिकित्सीय शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा की गुणवत्ताएं, बालिकाओं की शिक्षा।
- **सामाजिक मुद्दे एवं कल्याणकारी कार्यक्रम** - निम्नलिखित वर्गों से संबंधित सामाजिक मुद्दे एवं उनके कल्याणकारी कार्यक्रम - नि:शक्त वर्ग, वृद्धजन, बालक, महिलाएं, सामाजिक रूप से वंचित वर्ग, विकास परियोजनाओं के फलस्वरूप विस्थापित वर्ग।

❒ Part - 02

UNIT - 03

- **Education -** Elementary Education, Quality of Higher, Vocational, Technical and Medical Education, Issues Related to Girl's Education.
- **Social Issues and Welfare Programs -** Issues related with following Social Classes and their Welfare Programmes - Differently Abled Classes, Senior Citizens, Children, Women, Under Privileged Classes and Displaced Groups Arising Out of Development Projects.

## परीक्षा योजना

सामान्य अध्ययन के द्वितीय प्रश्न पत्र के भाग-II की इकाई-III का **पूर्णांक 30** है।

| इकाई | प्रश्न | संख्या | x | अंक | = | कुल अंक | आदर्श शब्द सीमा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इकाई-3 | अति लघु उत्तरीय | 03 | x | 03 | = | 09 | 10 शब्द/01 पंक्ति |
| | लघु उत्तरीय | 02 | x | 05 | = | 10 | 50 शब्द/05 से 06 पंक्तियां |
| | दीर्घ उत्तरीय | 01 | x | 11 | = | 11 | 200 शब्द |

# विषय सूची


| क्रमांक | अध्याय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 01 | मानव संसाधन विकास | 01 – 12 |
| 02 | शिक्षा | 13 – 28 |
| 03 | भारत में शिक्षा के विभिन्न स्तर | 29 – 55 |
| 04 | उच्च शिक्षा | 56 – 73 |
| 05 | तकनीकी शिक्षा | 74 – 85 |
| 06 | व्यावसायिक शिक्षा | 86 – 92 |
| 07 | बालिका शिक्षा | 93 – 100 |
| 08 | चिकित्सा शिक्षा | 101 – 107 |
| 09 | विविध | 108 – 116 |
| 10 | सुभेद्य वर्ग : मुद्दे एवं कल्याणकारी कार्यक्रम | 117 – 118 |
| 11 | बच्चे | 119 – 131 |
| 12 | महिलाएं | 132 – 151 |
| 13 | वृद्धजन | 152 – 160 |
| 14 | दिव्यांगजन या नि:शक्तजन | 161 – 170 |
| 15 | अनुसूचित जातियां, अनुसूचित जनजातियां तथा अन्य पिछड़ा वर्ग | 171 – 184 |
| 16 | अल्पसंख्यक वर्ग | 185 – 190 |
| 17 | विकास परियोजनाओं के फलस्वरूप विस्थापित वर्ग | 191 – 197 |
| 18 | एलजीबीटीक्यू समुदाय | 198 – 201 |
| 19 | भारत में श्रमिक वर्ग | 202 – 207 |

# मानव संसाधन विकास
# Human Resource Development


- मानव संसाधन विकास का अर्थ
- मानव संसाधन विकास की अवधारणा
- भारत के संदर्भ में मानव संसाधन विकास का महत्व
- मानव संसाधन विकास की आवश्यकता
- मानव संसाधन विकास में आने वाली बाधाएं
- मानव पूंजी के निर्माण हेतु आवश्यक तत्व
- भारत में मानव संसाधन के विकास से संबंधित मंत्रालय
- मानव संसाधन विकास के लिए शासकीय कार्यक्रम
- कुशल मानव संसाधन की उपलब्धता
- मानव विकास सूचकांक
- अभ्यास प्रश्न


## मानव संसाधन विकास का अर्थ
## Meaning of Human Resource Development

मानव संसाधन विकास **मानव पूंजी निर्माण की प्रक्रिया** है। इसमें मानवों के समूह को पूंजी के रूप में रूपान्तरित करने के लिए उनमें विद्यमान अन्तर्निहित क्षमता, निपुणता अथवा कौशल को बढ़ाते हुए उसे अधिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया जाता है, जिससे उन्हें उत्पादकीय कार्यों से जोड़ा जा सके। पारम्परिक रूप से भूमि, श्रम, पूंजी एवं उद्यमशीलता को उत्पादन कार्यों का अनिवार्य अवयव माना जाता था, परन्तु वर्तमान में **शिक्षा**, **स्वास्थ्य** एवं **उद्यमशीलता** मानव पूंजी के निर्माण के आवश्यक तत्व के रूप में जाने जाते हैं। इस मानव पूंजी का निवेश व्यावसायिक लाभों की प्राप्ति के लिए किया जाता है। मानव संसाधन के विकास की प्रभावशाली प्रक्रिया एवं इसके विभिन्न अर्थों को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है –

- मानव संसाधन किसी भी संस्था की महत्वपूर्ण संपत्ति है और इसका बेहतर विकास शिक्षा की नींव को मजबूत करके प्राप्त किया जा सकता है।
- नागरिक को बेहतर जीवन गुणवत्ता प्राप्त करने के लिए बुनियादी शिक्षा की आवश्यकता है, इससे हमारे नागरिकों का सर्वांगीण विकास होता है।
- देश के सभी नागरिक इसके सबसे मूल्यवान संसाधन हैं।
- यदि मानव संसाधन का कुशल प्रबंधन किया जाए तो यह संसाधन अपने इनपुट से कहीं अधिक आउटपुट प्रदान कर सकता है।
- देश के अन्य सभी संसाधनों का समय बीतने के साथ ह्रास होता है, लेकिन मानव संसाधन एक ऐसा मूल्यवान संसाधन है जो समय बीतने के साथ प्राप्त हुए अनुभवों के द्वारा और अधिक कुशल, गुणवत्तायुक्त तथा मूल्यवान हो जाता है।

## मानव संसाधन विकास की अवधारणा
## Concept of Human Resource Development

मानव संसाधन एक व्यापक अवधारणा है, मानव संसाधन विकास का सार शिक्षा है, जो देश के सामाजिक-आर्थिक ताने-बाने को संतुलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लगभग 1900 में जब उत्पादन क्षमता बढ़ने पर जोर दिया गया तब मानव संसाधन की अवधारणा प्रारंभ हुई। मानव संसाधन विकास कार्यबल के नए **कौशल**, **ज्ञान**, **योग्यता**, **क्षमता** और **प्रौद्योगिकी का विकास** करता है, जो देश के लिए **मानव पूंजी** का निर्माण करता है। मानव संसाधन विकास उन प्रमुख दक्षताओं को विकसित करता है जो संगठनों में व्यक्तियों को शिक्षण गतिविधियों के माध्यम से वर्तमान और भविष्य के कार्य करने में सक्षम बनाती है।

मानव संसाधन विकास किसी भी देश के **आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण** भूमिका निभाता है। वास्तव में **भौतिक संसाधनों का प्रभावी उपयोग मानव संसाधनों पर ही निर्भर है।** यदि मानव संसाधन पर किया गया निवेश कम होगा, तो भौतिक पूंजी का भी उपयोग लाभदायक ढंग से प्रयोग नहीं किया जा सकेगा, क्योंकि भौतिक संसाधनों के प्रभावी उपयोग हेतु **तकनीकी पेशेवर** और **कुशल मानव संसाधन** की आवश्यकता होगी। मानव संसाधन विकास की अवधारणा व्यावहारिक रूप में दो स्तरों पर समझा जा सकता है।

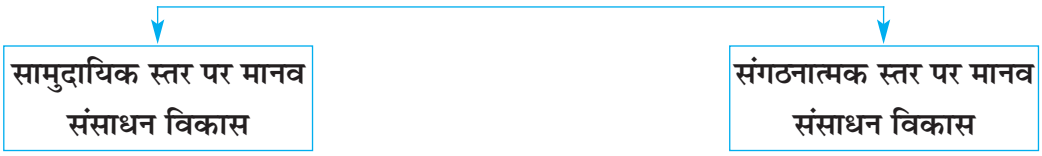


## ❐ सामुदायिक स्तर पर मानव संसाधन विकास

सामुदायिक स्तर पर मानव संसाधन को विकसित करने से तात्पर्य है, कि उसमें चिकित्सा, स्वास्थ्य, परिवार कल्याण, शिक्षा, आवास, रोजगार, शुद्ध पेयजल, परिवहन, समता, न्याय, मानवाधिकार, सुरक्षा सहित जीवन की सभी मूलभूत आवश्यकताओं की सुनिश्चितता सम्मिलित की जाए। वृद्धों, महिलाओं, बच्चों, असहायों, नि:शक्तजनों, निर्धनों, श्रमिकों, पिछड़े वर्गों तथा अन्य भेदभावग्रस्त व्यक्तियों को समाज कल्याण के रूप में दी जाने वाली सभी सेवाओं का प्रत्यक्ष प्रभाव समाज के मानव संसाधन सूचकांक पर पड़ता है। **सामुदायिक स्तर पर मानव संसाधन विकास के महत्व** को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है –

- व्यक्ति के कल्याण के बिना समाज का विकास असंभव है।
- यद्यपि बढ़ती जनसंख्या मानव विकास में बाधक है किन्तु यह भी सत्य है कि मानव विकास के बिना जनसंख्या नियंत्रण संभव नहीं है।
- किसी भी समाज एवं राष्ट्र की एकता, समरसता तथा प्रगति प्रमुख रूप से मानव विकास पर निर्भर करती है।
- संपूर्ण आर्थिक, तकनीकी, राजनीतिक तथा भौगोलिक विकास का आधार उसी स्थिति में सुदृढ़ होता है, जबकि मानव विकास हो चुका हो।

## ❐ संगठनात्मक स्तर पर मानव संसाधन विकास

संगठनात्मक स्तर पर मानव संसाधन विकास से तात्पर्य निजी या सरकारी विभागों, उपक्रमों या कार्यालयों में कार्यरत कार्मिकों के विकास से है। भारत में अभी तक मानव संसाधन विकास को गंभीरता से नहीं लिया है। इसी का दुष्परिणाम है कि सरकारी तंत्र में कार्यरत लोकसेवकों में कार्य के प्रति समर्पण, प्रतिबद्धता, कार्यकुशल और राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों के प्रति संवेदनशीलता का अभाव दिखाई देता हैं। मानव संसाधन के विकास के लिए केवल शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिप्रेक्ष्य को ही नहीं बल्कि मानसिक पक्ष को पर्याप्त गंभीरता से विश्लेषित किया जाना चाहिए। **संगठनात्मक स्तर पर मानव संसाधन विकास के महत्व** को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है –

- इससे संगठन के लक्ष्यों तथा उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता मिलती है।
- मानव संसाधन विकास का अंतिम परिणाम कार्मिक की संतुष्टि तथा कुशल कार्य निष्पादन के रूप में सामने आता है।
- मानव संसाधन विकास के पर्याप्त अवसर तथा व्यावहारिक नीतियां सामने आने पर योग्य एवं कुशल कार्मिक संगठन को मिलते हैं।
- कार्मिकों में नवीन तथा आकस्मिक परिस्थितियों का सफलतापूर्वक सामना करने की क्षमता उत्पन्न होती है।
- इससे संगठन की छवि, प्रतिष्ठा तथा सामाजिक उपादेयता में वृद्धि होती है।
- कार्मिकों के अभिप्रेरणा तथा मनोबल संबंधी पक्ष को मजबूती मिलती है।

# भारत के संदर्भ में मानव संसाधन विकास का महत्व
# Importance of Human Resource Development in the context of India

2050 तक भारत विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन सकता है और साथ ही भारत में विश्व की सबसे बड़ी कार्यशील आबादी भी होगी। **पॉपुलेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया** की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में **62%** से अधिक जनसंख्या की आयु 15 से 59 वर्ष के बीच है तथा जनसंख्या की औसत आयु 29 वर्ष है और इसमें लगातार वृद्धि हो रही है। वर्ष **2036** के आसपास यह चरम पर होगी तथा लगभग **65%** तक पहुँच जाएगी। इस दृष्टिकोण से भारत विश्व का सबसे युवा आबादी वाला देश है और भारत जनसंख्या की आयु संरचना के आधार पर आर्थिक विकास की क्षमता का प्रतिनिधित्व करने वाले जनसांख्यिकीय लाभांश के चरण से गुजर रहा है। **संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष** द्वारा भारत में जनसांख्यिकीय लाभांश पर एक अध्ययन में कहा गया है कि भारत में जनसांख्यिकीय लाभांश का अवसर वर्ष 2005-06 से वर्ष 2055-56 तक पांच दशकों के लिए उपलब्ध है।

वहीं संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) में औसत आयु 40 वर्ष, यूरोप में 46 वर्ष, जापान में 48 वर्ष होने की उम्मीद है, इसलिए भारत की गणना विश्व के उन देशों में की जाती है, जो वैश्वीकरण की ओर बढ़ते विश्व में **जनांकिकीय लाभांश (Demographic Devident)** अर्जित करने की स्थिति में है और इसके माध्यम से भारत अपनी घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु जनांकिकीय लाभांश का लाभ उठाने में सक्षम होगा। किन्तु यदि भारत जनसंख्या को कुशल मानव संसाधन में परिवर्तित करने में असफल रहा, तो इससे **जनांकिकीय आपदा (Demographic Disaster)** की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

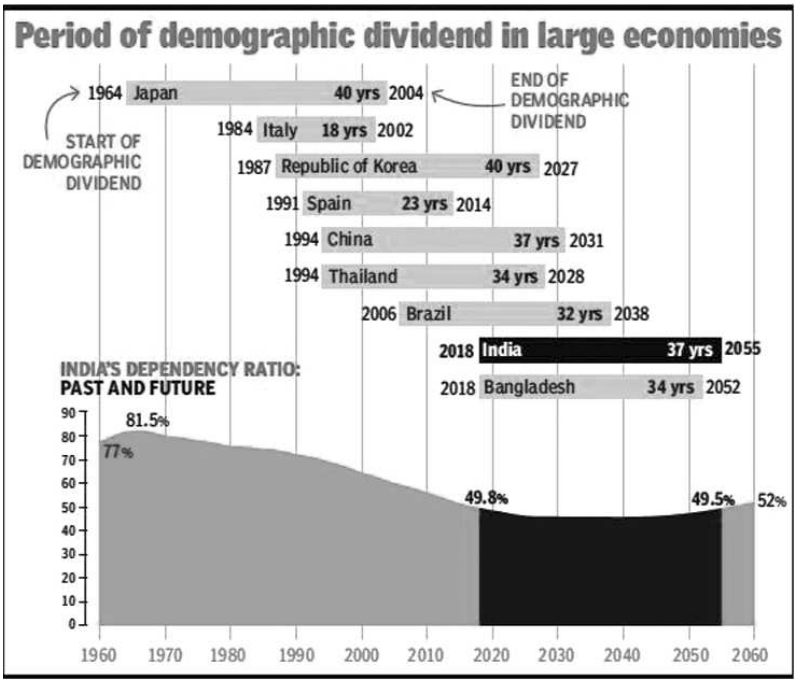


मानव संसाधन विकास का सार शिक्षा है, जो देश के **सामाजिक-आर्थिक ढांचे** को संतुलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। भारत सरकार ने मानव संसाधन विकास की दृष्टि से **प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण** पर ध्यान दिया है। 6 से 14 आयु वर्ग के बालकों को **अनिवार्य एवं नि:शुल्क शिक्षा को मौलिक अधिकार** बनाया गया है। इसके अतिरिक्त सर्वशिक्षा अभियान, मिड-डे मील योजना के माध्यम से साक्षरता का प्रसार एवं नामांकन दर में वृद्धि का प्रयास किया गया है।

अनेक प्रकार की शासन व्यवस्थाओं तथा प्रशासनिक प्रणालियों में 'मानव विकास' को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया जाता है। आधुनिक लोक कल्याणकारी राज्यों का दर्शन, चिन्तन तथा प्रयास, पूर्णत: मानव संसाधन विकास को समर्पित है, क्योंकि **मानव के सर्वांगीण विकास के बिना राज्य के विकास की कल्पना करना व्यर्थ है।**

## ❐ जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic Devident)

**संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष** (यूएनएफपीए) के अनुसार, जनसांख्यिकीय लाभांश का अर्थ, "देश की आर्थिक विकास क्षमता से है जो जनसंख्या की आयु संरचना में परिवर्तन के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती है, इसके अंतर्गत मुख्यत: जब कामकाजी आयु वर्ग की आबादी (15 से 64) का हिस्सा गैर-कामकाजी आयु वर्ग की आबादी (14 और उससे कम, और 65 और उससे अधिक) के हिस्से से बड़ा होता है, तब वह देश जनसांख्यिकीय लाभांश की स्थिति में होता है। जनसांख्यिकीय लाभांश अर्थव्यवस्था में मानव संसाधन के **सकारात्मक** और **सतत विकास** को दर्शाता है।

### • जनसांख्यिकीय लाभांश का महत्व

- कामकाजी उम्र की अधिक आबादी और आश्रित आबादी में कमी के कारण **आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि** होगी

जिनके परिणामस्वरूप बेहतर आर्थिक विकास होगा।

- वर्तमान में भारत एक ऐतिहासिक मोड़ पर खड़ा है, जहां वह अगले कई दशकों तक जनसांख्यिकीय लाभांश के द्वारा प्रचुर **आर्थिक लाभ** ले सकता है।
- जनसांख्यिकीय लाभांश के कारण **घरेलू उत्पादन में वृद्धि** हो सकती है एवं सेवाओं से मिलने वाला राजस्व कई गुना बढ़ सकता है।
- युवा कार्यशील आबादी के कुशल प्रशिक्षण के माध्यम से **प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि** हो सकती है जो देश की अर्थव्यवस्था के लिए लाभकारी सिद्ध होगा।

**कौशल की कमी**, **निम्न मानव विकास मापदंड** एवं **रोजगारविहीन विकास** जनसांख्यिकीय लाभांश से जुड़ी महत्वपूर्ण चुनौतियां हैं। इन चुनौतियों को **शिक्षा**, **स्वास्थ्य**, **रोजगार सृजन** (युवाओं को कार्यबल में शामिल करने के लिए राष्ट्र को प्रति वर्ष 10 मिलियन रोजगार सृजित करने की आवश्यकता), **शहरीकरण**, **मानव पूंजी के निर्माण** और **रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए कौशल विकास** आदि के द्वारा दूर किया जा सकता है।

## मानव संसाधन विकास की आवश्यकता
## Need for Human Resource Development

मानव संसाधन विकास निम्नलिखित कारणों से अत्यन्त आवश्यक है –

- विकास की सभी क्रियाओं का अंतिम उद्देश्य **मानवीय दशाओं को सुधारना** तथा लोगों के लिए विकल्पों को बढ़ाना है।
- मानव विकास **उच्चतर उत्पादक का साधन** है। स्वस्थ्य, शिक्षित, कुशल और सतर्क श्रमिक अधिक उत्पादन करने में समर्थ होते हैं। अत: उत्पादकता के आधार पर भी मानव विकास में निवेश न्यायसंगत माना जाता है।
- मानव प्रजनन की गति धीमी करके यह **परिवार के आकार के छोटा करने में मदद** करता है।
- मानव विकास **भौतिक पर्यावरण का भी हितैषी** होता है।
- सुधरी मानवीय दशाएं और घटी गरीबी स्वस्थ्य और **सभ्य समाज के निर्माण में योगदान** देती है तथा लोकतंत्र एवं **सामाजिक स्थिरता** को बढ़ाती है।
- मानव विकास सामाजिक अशान्ति को कम करने तथा **राजनीतिक स्थिरता** को बढ़ाने में भी सहायक हो सकता है।

## मानव संसाधन विकास में आने वाली बाधाएं
## Barriers to Human Resource Development

### ❐ शिक्षा और कौशल की कमी

भारत की अल्प-वित्त पोषित शिक्षा प्रणाली युवाओं को उभरते रोजगार के अवसरों का लाभ उठाने हेतु आवश्यक कौशल प्रदान करने के लिये अपर्याप्त है। **विश्व बैंक** के अनुसार, शिक्षा पर सार्वजनिक व्यय वर्ष 2020 में सकल घरेलू उत्पाद का केवल 3.4% था। एक अन्य रिपोर्ट से पता चला है कि प्रति छात्र सार्वजनिक व्यय के मामले में भारत 62वें स्थान पर है और छात्र-शिक्षक अनुपात एवं शिक्षा उपायों की गुणवत्ता में इसका प्रदर्शन खराब रहा है।

### ❐ महामारी का प्रभाव

विभिन्न अध्ययनों से पता चलता है कि स्कूल बंद होने से बच्चों की शिक्षा, जीवन और मानसिक कल्याण पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। **अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन** (ILO) के एक सर्वेक्षण से पता चलता है कि दुनियाभर में महामारी के दौरान 65% किशोरों की शिक्षा में कमी आई है।

### ❐ युवा महिलाओं के मुद्दे

बाल विवाह, लिंग आधारित हिंसा, दुर्व्यवहार और तस्करी के प्रति उनकी संवेदनशीलता, खासकर यदि प्राथमिक देखभाल करने वाले बीमार पड़ जाते हैं या मर जाते हैं जैसे मुद्दे युवा महिलाओं को उनकी पूरी क्षमता हासिल करने से रोकते हैं।

### ❐ रोजगार विहीन विकास

भारत के सकल घरेलू उत्पाद में मुख्य योगदानकर्ता सेवा क्षेत्र है जो श्रम प्रधान नहीं है और इस प्रकार यह रोजगार विहीन विकास को बढ़ावा देता है। इसके अलावा भारत की लगभग 50% आबादी अभी भी कृषि पर निर्भर है जो कि अल्प-रोजगार और प्रच्छन्न बेरोजगारी के लिए बदनाम है। **एनएसएसओ** के आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण 2017-18 के अनुसार, 15-59 वर्ष के आयु वर्ग के लिए भारत की **श्रम शक्ति भागीदारी दर** लगभग 53% है, अर्थात् कामकाजी उम्र की आबादी का लगभग आधा हिस्सा बेरोजगार है।

### ❐ निम्न सामाजिक पूंजी

इसके अलावा उच्च स्तर की भुखमरी, कुपोषण, बच्चों में बौनापन, किशोरियों में रक्ताल्पता का उच्च स्तर, खराब स्वच्छता आदि ने भारत के युवाओं की क्षमता को साकार करने में बाधा पहुंचाई है।

मानव संसाधन के विकास के मार्ग में आने वाली अन्य बाधाएं निम्नलिखित हैं -

- मातृत्व मृत्यु दर एवं शिशु मृत्यु दर में वृद्धि।
- श्रम बाजार की अकार्यकुशलता।
- श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा प्रणाली का अभाव।
- बालश्रम एवं बाल अपराध जैसी समस्याओं में वृद्धि।
- युवाओं की दिशाहीनता, अति सक्रियता और स्वयं को उत्पादकीय प्रक्रियाओं से न जोड़ पाना।
- प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लक्ष्य की प्राप्ति के मार्ग में बाधा।
- महिलाओं, बच्चों, श्रमिकों का कमजोर स्वास्थ्य, कुपोषण आदि की समस्याएं।
- विभिन्न वर्गों की असामाजिक कार्यों में संलिप्तता।
- निर्धनता में वृद्धि।

## मानव पूंजी के निर्माण हेतु आवश्यक तत्व
## Essential Elements for the Development of Human Capital

मानव संसाधन विकास की प्रक्रिया में एक ऐसी सुदृढ़ सामाजिक कल्याण की प्रणाली का विकास लक्षित है, जिससे श्रम की गतिशीलता में वृद्धि कर राष्ट्र तथा उसकी अर्थव्यवस्था की सकल उत्पादकता बढ़ाई जा सके। मानव को मानव पूंजी के रूप में विकसित करने के लिए अनिवार्य तत्व निम्नलिखित हैं -

- **शिक्षा**

  मानव विकास हेतु यह एक बुनियादी शर्त है। उच्च गुणवत्ता की सार्वभौमिक शिक्षा में निवेश का आकार जितना बड़ा होगा, राष्ट्र की समृद्धि इतनी ही तेज होगी। वस्तुत: शिक्षा सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण की सुदृढ़ आधार है।

- **कौशल प्रोन्नयन**

  अभिरूचियों की पहचान एवं कौशल प्रोन्नयन मानव पूंजी के निर्माण की आवश्यक शर्त है। इसके तहत् उपयुक्त व्यावसायिक प्रशिक्षण, नेतृत्व, संचार, विक्रय की कला, विपणन मोलभाव की तकनीक जैसे बौद्धिक एवं विशिष्टीकृत कौशलों के विकास का प्रयास सम्मिलित है।

- **सूचना एवं संचार**

  सूचना प्रौद्योगिकी, संचार क्रांति, कम्प्यूटर अनुप्रयोगों एवं तीव्र गति से विचारों का कार्यरूप देने के लिए बढ़ते दबाव ने संगठन द्वारा अपनाई जा रही प्रशिक्षण प्रविधियों के बारे में प्रबंधन तंत्र को नए सिरे से सोचने के लिए बाध्य कर दिया है।

- **अनुभव एवं विचार**

  विचारों और अनुभवों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया मानव पूंजी निर्माण का आवश्यक भाग है। युवा उद्यमियों के द्वारा प्रारंभ की गई नई स्टार्ट-अप कंपनियों के सफल संचालन में उद्योगपतियों के अनुभवों का विशेष योगदान रहता है।

- **उद्यमशीलता**

  उद्यमशीलता का विकास भी मानव पूंजी निर्माण के लिए आवश्यक है, क्योंकि इससे रोजगार के अवसरों के सृजन की दर में वृद्धि, अतिरिक्त संपदाओं के सृजन नई पद्धतियों व तकनीकों के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा मिलता है।

- **युवा आबादी की रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए कौशल विकास**

  भारत की श्रम शक्ति को आधुनिक अर्थव्यवस्था के लिए सही कौशल के साथ सशक्त बनाने की आवश्यकता है। सरकार ने वर्ष 2022 तक भारत में 500 मिलियन लोगों को कौशल युक्त करने के समग्र लक्ष्य के साथ राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एनएसडीसी) की स्थापना की है।

- **सामाजिक बुनियादी ढांचे में सुधार**

  यदि भारत अपने युवा उभार की आर्थिक क्षमता का लाभ उठाना चाहता है तो उसे सामाजिक बुनियादी ढांचे जैसे- अच्छा स्वास्थ्य, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में सुधार करने के लिए निवेश करना चाहिए और पूरी आबादी को अच्छा रोजगार प्रदान करने का प्रयास करना चाहिये।

- **बुनियादी स्वच्छता को बनाए रखना**

  चूंकि स्कूल बंद होने से मासिक धर्म संबंधी स्वच्छता उत्पादों की किशोरों तक पहुंच जैसी योजनाएं प्रभावित हुई हैं। बालिकाओं को सैनिटरी नैपकिन वितरित करने के लिए फ्रंटलाइन स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को सहयोग करने हेतु शिक्षक स्वयंसेवकों के रूप में काम कर सकते हैं।

मानव संसाधन विकास की प्रक्रिया को अभियांत्रिकी एवं कुशल प्रबंधन जैसी गतिशीलता घटनाओं से गति मिलती है। इसमें यह प्रयास किया जाता है कि देश की जनशक्ति **प्रविधिक ज्ञान**, **योग्यता** एवं **कुशलता** की दृष्टि से विशिष्टता प्राप्त कर सके।

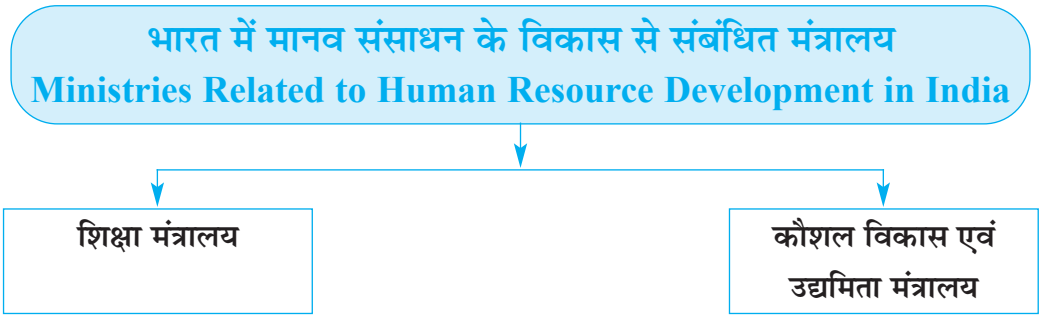


## ❐ शिक्षा मंत्रालय (Ministry of Education)

यह मंत्रालय पूर्व में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के नाम से जाना जाता था, किंतु नई शिक्षा नीति, 2020 में इसका नाम परिवर्तित कर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया। विभिन्न उद्देश्यों के माध्यम से यह मंत्रालय देश में मानव संसाधन का विकास कर रहा है, महत्वपूर्ण उद्देश्य निम्नलिखित है -

- शिक्षा के मौलिक अधिकारों के माध्यम से सार्वजनिकीकरण या सार्वभौमीकरण के द्वारा आने वाली पीढ़ी को शिक्षा प्रदान

करके अनेक समस्याओं को समाप्त किया जा सकता है।

- शिक्षा के माध्यम से दलितों व सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से पिछड़े व्यक्तियों को समाज की मुख्य धारा में लाने का प्रयास करना।
- शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति का निर्माण करना और यह सुनिश्चित करना कि इसे प्रभावी रूप से लागू किया जाए।
- संपूर्ण देश में शिक्षण संस्थानों की गुणवत्ता में सुधार एवं लोगों की शिक्षा तक सुगम पहुंच सुनिश्चित करना।
- निर्धन महिलाओं और अल्पसंख्यकों जैसे वंचित समूहों पर विशेष ध्यान देना।
- समाज के वंचित वर्ग के योग्य छात्रों हेतु छात्रवृत्ति, ऋण सब्सिडी आदि के रूप में वित्तीय सहायता प्रदान करना।
- शिक्षा के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का प्रोत्साहन तथा विदेशी सरकारों एवं विश्वविद्यालय के साथ मिलकर विभिन्न कार्यक्रम संचालित करना।

### ❐ कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय (Ministry of Skill Development & Entrepreneurship)

इस मंत्रालय का गठन **9 नवंबर, 2014** को भारत सरकार के द्वारा किया गया था। यह मंत्रालय देशभर में कौशल विकास के सभी प्रयासों पर समन्वय करने, कुशल जनशक्ति की मांग और आपूर्ति के बीच अंतर को दूर करने, व्यावसायिक और तकनीकी प्रशिक्षण ढांचे का निर्माण करने, कौशल उन्नयन करने और नवीन सोच का निर्माण करने के लिए उत्तरदायी है। मंत्रालय के कुछ महत्वपूर्ण उद्देश्य निम्नलिखित है –

- मंत्रालय का उद्देश्य **'कुशल भारत'** के दृष्टिकोण को प्राप्त करने के लिए गति और उच्च मानकों के साथ बड़े पैमाने पर कुशल बनाना है।
- संपूर्ण देश में सभी प्रकार के कौशल विकास संबंधी प्रयासों के समन्वय एवं कुशल श्रमिकों की मांग एवं आपूर्ति में व्याप्त असंबद्धता को समाप्त करना।
- व्यावसायिक और तकनीकी प्रशिक्षण फ्रेमवर्क का निर्माण करना।
- देश के युवाओं का कौशल उन्नयन करना।
- नवीन कौशल निर्माण के साथ नए रोजगारों का सृजन करना।
- राष्ट्रीय कौशल विकास एजेंसी **(NSDA)**, राष्ट्रीय कौशल विकास निगम **(NSDC)**, राष्ट्रीय कौशल विकास कोष **(NSDF)** और अन्य 33 राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थान एवं 38 क्षेत्र कौशल परिषदों के माध्यम से कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।

## मानव संसाधन विकास के लिए शासकीय कार्यक्रम
## Government Programs for Human Resources Development

### ❐ प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY)

- **15 जुलाई, 2015** में प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना का शुभारंभ किया गया।
- एक कौशल प्रमाणीकरण कार्यक्रम, जिसके अंतर्गत एक बड़ी संख्या में भारतीय युवाओं एवं युवतियों को उद्योग-अनुरूप कौशल प्रशिक्षण दिया जाएगा, जो इन्हें बेहतर जीविका सुनिश्चित करने में सहायता प्रदान करेगा।
- प्रमाणन प्रक्रिया में मानकीकरण को प्रोत्साहन देना और कौशल पंजीकरण की प्रक्रिया की शुरुआत करना।
- बड़ी संख्या में भारतीय युवाओं को कौशल प्रशिक्षण देने, रोजगार लेने के योग्य बनाने और जीविकोपार्जन करने के लिए सक्षम करना और इसके लिए प्रेरित करना।
- वर्तमान में मौजूद श्रमबल की उत्पादकता को बढ़ाना और देश की आवश्यकतानुसार प्रशिक्षण और प्रमाणन को बढ़ावा देना।

## ❐ प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना 2.0 (PMKVY 2.0)

- कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय द्वारा **अक्टूबर, 2016** में प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY 2.0) चलाई गई, जिसका उद्देश्य अल्पकालिक प्रशिक्षण एवं रिकॉग्निशन ऑफ प्रायर लर्निंग (RPL) के जरिए 2020 तक एक करोड़ लोगों को कौशल प्रदान करना है।

## ❐ प्रवासी कौशल विकास योजना (Overseas Skill Development Scheme)

- **9 जनवरी, 2017** को 'प्रवासी कौशल विकास योजना' शुरू करने की घोषणा की गई। यह **विदेश मंत्रालय** की एक कौशल विकास योजना है।
- अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार चुनिंदा क्षेत्रों में संभावित प्रवासी कामगारों के कौशल को बढ़ाना है, ताकि उनके लिए विदेशों में रोजगार के अवसरों को बढ़ाया जा सके।
- इस योजना का आदर्श वाक्य है- 'सुरक्षित जाएं, प्रशिक्षित जाएं, विश्वास के साथ जाएं'।
- इस योजना के तहत कौशल प्रशिक्षण का दायित्व कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय तथा इससे जुड़ी संस्थाओं का है।

## ❐ राष्ट्रीय कौशल विकास अभियान (National Skill Development Campaign)

- **2015** में आरंभ किया गया है।
- इस अभियान के तहत 20 से अधिक केंद्रीय मंत्रालय/विभाग दीर्घकालिक एवं अल्पकालिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के जरिए युवाओं को कौशल प्रशिक्षण देने की योजनाएं/कार्यक्रम चला रहे हैं।

## ❐ स्टैंडअप इंडिया योजना (Standup India Scheme)

- **5 अप्रैल 2016** को स्टैंड-अप इंडिया योजना शुरू की गई। इस योजना का उद्देश्य **आर्थिक सशक्तिकरण** और **रोजगार सृजन** पर विशेष ध्यान देते हुए जमीनी स्तर पर **उद्यमिता को बढ़ावा** देना है।
- इसके तहत बैंक की प्रत्येक शाखा में अनुसूचित जाति/जनजाति के कम-से-कम एक व्यक्ति और एक महिला को नया उद्यम आरंभ करने के लिए **10 लाख रुपये से 1 करोड़ रुपए** के बीच के बैंक ऋण दिलाने में मदद की जाती है।
- स्टैंडअप इंडिया की अवधि वित्त वर्ष 2025 तक बढ़ा दी गई है।
- स्टैंड-अप इंडिया योजना के तहत बैंकों द्वारा 5 वर्षों में 1,14,322 से अधिक खातों के लिए **25,586 करोड़ रुपए** से अधिक की धनराशि मंजूर की गई।

## ❐ प्रधानमंत्री युवा योजना (PYY)

- **9 नवंबर, 2016** को युवाओं को उद्यमशीलता प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु 'प्रधानमंत्री युवा योजना' का शुभारंभ किया गया। इस योजना के तहत देश के 30 वर्ष से कम आयु के युवाओं को उद्यमशीलता प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा।
- उन युवाओं को प्रशिक्षित करना जो शिक्षित तो है, किंतु वैश्विक प्रतिस्पर्धा का सामना करने के लिए पर्याप्त कुशल (Skilled) और जानकार नहीं है।
- योजना के तहत 3050 संस्थानों के माध्यम से पांच वर्षों में 7 लाख से अधिक युवा प्रशिक्षुओं को उद्यमशीलता प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाएगा।

## ❐ संकल्प और स्ट्राइव (SANKALP and STRIVE)

- 11 अक्टूबर, 2017 को 'संकल्प' और 'स्ट्राइव' योजनाओं को स्वीकृति प्रदान की गई।
- **संकल्प** - आजीविका संवर्धन हेतु कौशल अभिग्रहण और ज्ञान जागरूकता। (SANKALP: Skills Acquisition &

Knowledge Awareness for Livelihood Promotion)

- **स्ट्राइव** – औद्योगिक मूल्य संवर्धन हेतु कौशल सशक्तिकरण। (STRIVE: Skill Strengthening for Industrial Value Enhancement)
- संकल्प एवं स्ट्राइव दोनों ही योजनाओं का उद्देश्य अल्पावधि तथा दीर्घावधि के व्यावसायिक शिक्षण/प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता तथा उनकी बाजार प्रासंगिकता में सुधार करना है।
- समाज में महिलाएं, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं दिव्यांगजनों आदि जैसे **सुभेद्य वर्गों को कौशल प्रशिक्षण** का अवसर प्रदान कर उनका **मुख्य आर्थिक प्रवाह में समावेशन** करना भी योजना का प्रमुख उद्देश्य है।
- संकल्प योजना के तहत 3.5 करोड़ **युवाओं को बाजार के अनुरूप प्रशिक्षण** प्रदान कराने का लक्ष्य रखा गया है।
- संकल्प एवं स्ट्राइव योजनाओं द्वारा 'राष्ट्रीय प्रत्यायन और प्रमाणन निकाय' (National Bodies For Accreditation and Certification) की स्थापना की जाएगी।

## ❐ श्रेयस योजना (SHREYAS Scheme)

- मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय शिक्षुता प्रोत्साहन योजना (National Apprenticeship Promotional Scheme-NAPS) के माध्यम से आने वाले सत्र से सामान्य स्नातकों को उद्योग की स्थापना हेतु शिक्षुता अवसर प्रदान करने के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त युवाओं को प्रशिक्षण और कौशल प्रदान करने की योजना शुरू की गई है।
- कार्यक्रम में तीन केंद्रीय मंत्रालयों की पहल शामिल है–मानव संसाधन विकास मंत्रालय, कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय तथा श्रम एवं रोजगार मंत्रालय।
- शिक्षा और उद्योग/सेवा क्षेत्र के बीच सहयोगात्मक संबंधों को बढ़ावा देना।
- छात्रों में समय की मांग के अनुसार प्रगतिशील तरीके से कौशल को बढ़ावा देना।
- उच्च शिक्षा के दौरान शिक्षण के साथ आय अर्जन सुनिश्चित करना।
- अच्छी गुणवत्ता वाली जनशक्ति सुनिश्चित करके व्यापार उद्योग क्षेत्र में सहयोग करना।
- सरकार के प्रयासों को सुविधाजनक बनाने के साथ ही छात्र समुदाय को रोजगार से जोड़ना।

## ❐ अटल नवाचार मिशन एवं सेतु (Atal Innovation Mission and SETU)

- 'अटल नवाचार मिशन' (Atal Innovation Mission: AIM) तथा 'स्वरोजगार एवं प्रतिभा उपयोग' (Self Employment & Talent Utilization: SETU) भारत में नवप्रवर्तन एवं उद्यमिता की संस्कृति के प्रोत्साहन हेतु भारत सरकार का एक प्रयास है। इसके माध्यम से सरकार द्वारा विश्वस्तरीय नवप्रवर्तन तथा स्वरोजगार गतिविधियों (विशेष रूप से तकनीकी क्षेत्र में) को प्रोत्साहन प्रदान किया जाता है।
- भारत के नवाचार पारितंत्र में आने वाली बाधाओं की पहचान करना तथा उन्हें समाप्त करने के लिए रणनीति तैयार करना।
- समन्वय, समर्थन एवं सहयोग के द्वारा भारत की नवाचार क्षमता का विकास करना।
- छात्रों में नवाचार के प्रति जागरूकता लाना तथा उनमें नवाचार की प्रवृत्ति का विकास करना।
- अनुदानों, पुरस्कारों एवं चुनौती कार्यक्रमों के द्वारा नवप्रवर्तकों को प्रोत्साहित करने के लिए एक तंत्र विकसित करना।
- जिलों में 'स्वरोजगार एवं प्रतिभा उपयोग' (SETU) केंद्रों की स्थापना करना।
- क्षमतावान उद्यमियों को प्रशिक्षित करने के लिए सार्वजनिक – निजी भागीदारी पर आधारित 'अटल उद्भवन केंद्रो' (Atal incubation Centres) की स्थापना करना, ताकि स्टार्ट-अप को बढ़ावा देने के साथ ही रोजगार सृजन किया जा सकेगा।

### ❐ स्किल इंडिया पोर्टल (Skill India Portal)

- यह बेहतर कौशल विकास प्रबंधन प्रणाली के तहत् सभी हितधारकों को कौशल पारिस्थितिकी तंत्र में एक मजबूत एकीकृत मंच लाने के लिए शुरू से अंत तक समाधान प्रदान करेगी।
- इसका उद्देश्य सभी उम्मीदवारों और प्रशिक्षण भागीदारों के डेटाबेस को एक मंच पर लाना है।
- यह कार्यक्रम कौशल विकास को सुविधाजनक बनाने में मदद करने के साथ, नई पीढ़ी के तकनीकी क्षेत्र जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वचालन, रोबोटिक्स और ब्लॉक-चेन तकनीक आदि में कुशल मानव संसाधन तैयार करेगा।

### ❐ स्किल सारथी (Skill Sarthi)

- स्किल इंडिया ने स्किल सारथी जैसी पहल के माध्यम से समर्थ उम्मीदवारों को कौशल-आधारित कैरियर परामर्श प्रदान करने के लिए एक मेगा काउंसलिंग प्रोग्राम के तहत् एक मंच बनाया है।
- कौशल सारथी जैसी पहल, निर्णय लेने के कौशल के साथ संभावित कार्यबल, पूर्व-नियोजन कौशल, वर्कर की परिपक्वता में वृद्धि, अभिरूचि की दर में वृद्धि और अभ्यार्थियों के रोजगार, अभिरूचि और प्रशिक्षण के अनुसार उनके रोजगार की दर में वृद्धि के माध्यम से उद्योग की मांग और व्यापार के पक्ष को भी ध्यान में रखती है।

## कुशल मानव संसाधन की उपलब्धता
## Availability of Skilled Human Resource

- एक कुशल श्रमिक कोई भी कार्यकर्ता हो सकता है, जिसकी विशेष कौशल, प्रशिक्षण, ज्ञान और उसके काम में क्षमता होती है। एक कुशल कार्यकर्त्ता एक कॉलेज, विश्वविद्यालय या तकनीकी स्कूलों में प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
- कुशल मानव संसाधन किसी भी समाज के विकास की पहली इकाई होती है। निर्धन बच्चों तथा दुर्गम एवं सुदुरवर्ती क्षेत्रों में रहने वाले बच्चों के लिए भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित कर कुशल मानव संसाधन की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकती है।
- भारत में कुशल श्रमबल का विकास करना उतना ही आवश्यक है, जितना सभी के लिए आजीविका के नवीन अवसर सुनिश्चित करना है।
- उद्योग के लिए कुशल श्रमिकों की उपलब्धता भारत के लिए आने वाले दशक में उच्च विकास दर हासिल करने एवं बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण होगी, किंतु वर्तमान में कुशल जनशक्ति की उपलब्धता में गंभीर कमी है।

## मानव विकास सूचकांक
## Human Development Index

मानव विकास ही सभी आर्थिक गतिविधियों का अंतिम लक्ष्य है। मानव विकास के कई आयाम है। इसके लिए **संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP)** ने 1990 में प्रकाशित अपनी पहली में मानव विकास सूचकांक की संकल्पना प्रस्तुत की।

मानव विकास सूचकांक किसी भी देश के मानव विकास के संदर्भ में तीन मूलभूत आयामों की माप करता है। ये तीन मूलभूत आयाम हैं -

1. लंबा एवं स्वस्थ जीवन (Long and Healthy Life)
2. ज्ञान की प्राप्ति (Knowledge)
3. एक अच्छा जीवन स्तर (A Decent Standard of Living)

मानव विकास सूचकांक को ज्ञात करने के लिए इन तीन आयामों के लिए आकलित सूचकांकों की ज्यामितीय माध्य ली जाती है। इसका **मान 0 और 1** के बीच होता है। किसी राष्ट्र के लिए यह मान 0 या 0 के आस-पास होना खराब स्थिति या कम विकास द्योतक है, जबकि 1 या 1 के आस-पास बेहतर स्थिति या उच्च व संतुलित विकास का द्योतक है।

- उच्च मानव विकास वाले देश - सूचकांक में 0.800 से 1.000 अंक
- मध्यम मानव विकास वाले देश - सूचकांक में 0.500 से 0.0799 अंक
- निम्न मानव विकास वाले देश - सूचकांक में 0.000 से 0.499 अंक

### मध्य प्रदेश में मानव विकास सूचकांक के संकेतांक

मध्य प्रदेश ने मानव विकास में लगातार प्रगति की है, जिसका प्रमाण यह है विकास सूचकांक जो वर्ष 1991 में 0.328 था वह वर्ष 2011 में 0.451 तक पहुंच गया है, जबकि राष्ट्रीय स्तर पर 0.504 मापा गया है। वर्ष 2015 तक राज्य का मानव विकास सूचकांक 0.557 तक पहुंच गया है।